श्री शशिशेखर लिखित पुस्तक 'लीक से हटकर' के लोकार्पण समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–12.02.2017, समय–अपराह्न 12:30 बजे, स्थान–गाँधी मैदान, पटना)

श्री शशिशेखर लिखित पुस्तक 'लीक से हटकर' के लोकार्पण–समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित डॉ॰ रजी अहमद जी, डॉ॰ शैवाल गुप्ता जी, 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक श्री शशिशेखर जी, स्थानीय सम्पादक श्री तीरविजय सिंह जी, श्री विनोद बंधु जी, श्री रत्नेश्वर जी, 'हिन्दुस्तान' तथा अन्य मीडिया संस्थानों से जुड़े पत्रकार मित्रों, पटना–पुस्तक मेला आयोजन–समिति के पदाधिकारीगण, पुस्तकप्रेमी, देवियों एवं सज्जनों !!

''पटना पुस्तक मेला'' में आने हेतु आमंत्रण मुझे प्राप्त हुआ था, परन्तु पूर्व निर्धारित अपनी कम्बोडिया–यात्रा के कारण, मैं उद्घाटन –कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो पाया। दरअसल, मेला एक ऐसा स्थल होता है, जो स्वतः अपनी ओर लोगों को आकर्षित करता है। बात जब पुस्तक मेले की हो, तो फिर पूछना ही क्या? पुस्तकों को 'मनुष्य का सर्वोत्तम मित्र' कहा गया है। फिर, इन मित्रों से मिलने, इनके साथ बैठने–बतियाने में भला किसे मजा नहीं आएगा! अखबारों खासकर प्रिन्ट–मीडिया को भी मैं धन्यवाद करूँगा, जो पुस्तक मेले में होनेवाले हर छोटे–बड़े आयोजनों को भी प्रमुखतापूर्पक तस्वीरों के साथ छाप रहे हैं। लगभग एक पूरा पृष्ठ आपने इस मेले के नाम कर दिया है। यह अच्छी बात है। सकारात्मक पत्रकारिता का ज्वलंत उदाहरण है। पुस्तक मेला में हर विषय की पुस्तकें बिक रही हैं, तकनीकी अध्ययन–सामग्रियाँ भी उपलब्ध हैं, हस्तकला शिल्प आदि की भी प्रदर्शनियाँ लगी हुई हैं, नुक्कड़–नाटक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

भी आयोजित हो रहे हैं, सुप्रसिद्ध लेखकों से आपकी मुलाकातें हो रही हैं, विचार–गोष्ठियाँ सम्पन्न हो रही हैं –कुल मिलाकर देखा जाए तो यह सारस्वत समारोह, बिहार की साझी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक समृद्धि एवं विरासत को मूर्त्त रूप देनेवाला एक जीवंत आयोजन है, जिसके लिए आयोजकगण बधाई के पात्र हैं। मित्रों, बिहार राज्य पुस्तकें प्रकाशित करने और पढ़ने–पढ़ाने की संस्कृति के लिहाजन शुरू से समृद्ध रहा है। बिहार की बदौलत किताबों और अखबारों की यह दुनियाँ सचमुच संजीवनी पाती है।

मित्रों, हमारी भारतीय संस्कृति उत्सवधर्मी रही है। हम पर्व–त्योहार, उत्सव–आयोजन बड़ी उमंग और खुशी के साथ मनाते हैं। यह आनंद और उल्लास हमारे जीवन की एकरसता को दूर कर नयी स्फूर्त्ति और ताजगी प्रदान करते हैं। अपने उत्सवों के आयोजन के क्रम में हम विविध संस्कार सम्पन्न करते हैं। इस पुस्तक–लोकार्पण या विमोचन–समारोह की तुलना अगर किसी मानवीय संस्कार या आयोजन से करनी हो तो हमें लोक जीवन और लोक संस्कृति की दुनियाँ में नजर दौड़ानी होगी। इस समारोह की तुलना नवजात शिशु के 'छठियार' (छठी) से भी की जा सकती है, जो वस्तुतः नवागत के स्वागत का ही कार्यक्रम होता है। पुस्तक की पठनीयता और उसके विचार और शिल्प आदि पर तो बाद में समीक्षक विचार करते हैं। वस्तुतः 'लोकार्पण' का दिन, मेरी समझ से मूल रूप से नयी पुस्तक के स्वागत का ही दिन होता है। मैं आज 'हिन्दुस्तान' और 'कादम्बिनी' के यशस्वी सम्पादक श्री शशि शेखर जी की सामयिक प्रकाशन से सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'लीक से हटकर' का पूरे आदर एवं आत्मीयता के साथ स्वागत करता हूँ।

भारतीय समाज में एक काव्यमय उक्ति प्रचलित है –''लीक लीक गाड़ी चले, लीक–लीक चले कपूत। लीक छोड़ि तीनों चले, शायर, सिंह, सपूत।'' शशि जी की पुस्तक का भी नाम

है –''लीक से हटकर''। मुझे लगता है, इस पुस्तक में भी एक शायर की काव्यमयता है, सिंह की निडरता है और सपूत का दायित्व–बोध है। पुस्तक की भाषा में कविता–सी रवानी है, इसके विचारों में पूरी निर्भयता और निष्पक्षता है तथा समाज और देश के नव–निर्माण के सपनों की सुगबुगाहट है।

पुस्तक की भूमिका 'मेरी बात' में शशि शेखर जी ने लिखा है कि 'मैं भूमिकाएँ लिखने के खिलाफ रहा हूँ।' चूँकि वे ''मैं नहीं मेरी बात ही बोलेगी'' की धारणा के समर्थक हैं। मुझे लगता है, इस पुस्तक के लिए यह 'भूमिका' बहुत जरूरी थी। इससे पुस्तक पढ़ने का एक नजरिया मिलता है। यह पुस्तक 'कादम्बिनी' में लिखे शशि शेखर जी के सम्पादकीय आलेखों का संकलन है। 'कादम्बिनी' देश की सांस्कृतिक–साहित्यिक परम्परा की प्रतिनिधि पत्रिका रही है। उसके लब्धप्रतिष्ठ सम्पादकों की भी एक समृद्ध परम्परा रही है। रामानंद दोषी का 'विन्दु–विन्दु विचार' हो या राजेन्द्र अवस्थी जी का 'काल–चिंतन' –इन दोनों स्तंभों के नियमित पाठक इसे आज भी याद कर गौरवान्वित होते हैं। मुझे खुशी है कि 'कादम्बिनी' में 'विरासत' स्तंभ में पुराने सम्पादकीय–लेखन की भी पुनर्प्रस्तुति शशि शेखर जी इधर के अंको में कर रहे हैं। इतिहास और वर्त्तमान दोनों के सुन्दर सम्मिलन पर भविष्य की वैचारिक रूप–रेखा तैयार करने का शशि शेखर जी का यह प्रयास, उनकी दूरदर्शी सोच का परिचायक है।

यह पुस्तक वास्तव में, 'लीक से हटकर' है। इसे आप किसी भी साहित्यिक विधा के दायरे में नहीं रख सकते। यह न तो उपन्यास है, न कहानी, न नाटक न संस्मरण, न ही कविता और न ही आत्मकथा। परन्तु, इसमें आपको इन सबका आस्वाद मिलेगा।

'लीक से हटकर' सचमुच एक मौलिक पुस्तक है, जो पाठकों से पूरा सम्मान पाएगी। मैं इस पुस्तक को औपचारिक रूप से आज लोकार्पित करता हूँ और इसके लेखक और प्रकाशक को शतशः बधाई देता हूँ। मैं पूरे 'हिन्दुस्तान' परिवार और बिहार के मीडिया जगत् को भी साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने 'पटना पुस्तक मेला' को गुलजार बनाये रखने में काफी सहयोग प्रदान किया है। मैं मेला–आयोजकों और सबसे बढ़कर बिहार की पुस्तक प्रेमी–जनता को भी बहुत–बहुत बधाई देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना